The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 10 | October 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

विद्यालय में बस्ता रहित नवाचार का भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समाज दर्शन में योगदान

पवन कुमार
शोधार्थी पीएचडी (शिक्षा शास्त्र)
शिक्षा विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू) राजस्थान
DOI: 10.5281/zenodo.14193572

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में जिस प्रकार से ज्ञान के बोझ पर अधिक फल दिया जाता था,इसके विपरीत आधुनिक भारतीय शिक्षा पद्धति में जिस प्रकार से बच्चों पर पाठ्यक्रम का बोझ लाद दिया है । इसके परिणाम सार्थक प्रतीत नहीं हो रहे हैं । आधुनिकता के इस भाव ने बच्चों को अंकों से मूल्यांकित करके उसके समग्र विकास पर विपरीत प्रभाव डाला है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में जिस प्रकार से बच्चों के शैक्षिक,सामाजिक,मनोवैज्ञानिक व शारीरिक विकास पर ध्यान दिया गया है वह वर्तमान पद्धति में परिलक्षित नहीं होता है । जिस प्रकार से सामाजिकता में परिवर्तन हुए हैं,उसी प्रकार शिक्षा व्यवस्था ने परिवर्तन अवश्य किया है, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि समाज का यह परिवर्तन शिक्षा के कारण ही हुआ है। इस परिवर्तन में जो नकारात्मकता समाविष्ट हुई है उनका श्रेय शिक्षा पद्धति में दोष के कारण ही हुआ है। जिस प्रकार से सूचनाओं का क्षेत्र बढ़ता जा रहा है उसी के अनुरूप बच्चों के मस्तिष्क में सभी सूचनाओं को भरने के प्रयास में उनके ऊपर पाठ्यक्रम की विशालता का बोझ लाद दिया गया है । यह बोझ वह कंधों पर लदा रहता है । शिक्षाविदों एवं समाज शास्त्रियों ने सभी सूचनाओं का बच्चों में समाहित करना उसके समग्र विकास के लिए जरूरी मान लिया है। लेकिन जरूरी यह था, कि जिस परिवेश में व क्षेत्र में वह रह रहा है, प्राथमिकता से उसे उसके बारे में पहले समझाना चाहिए था। बाद में बाहर के ज्ञान की ओर ले जाना चाहिए था । इसी संदर्भ पर कार्य करते हुए आधुनिक शिक्षा पद्धति में पुनः ऐसे परिवर्तन की और शिक्षाविदों का ध्यान गया है, कि बच्चों को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़कर ही उसका समग्र विकास किया जा सके। इस ओर विविध रिपोर्ट एवं आयोगों की सिफारिश पर कार्य सतत जारी है । पढ़ाई के बोझ को लेकर 1993 में प्रोफेसर यशपाल की रिपोर्ट "लर्निंग विदाउट बर्डन" का काफी महत्व है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी भारत के विविध सांस्कृतिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की बात कही गई है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार

"शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्याय संगत और न्याय पूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है।" इसके अनुसार पारंपरिक और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए अनुभव आधारित आनंददाई अधिगम को अपनाना जरूरी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा

प्राचीन काल से ही हमारा देश उच्च मानवीय मूल्य एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा को दुनिया के अलग-अलग कोनों में स्वीकार है। अनेकों देशों ने इन परंपराओं के सहारे चलकर अपने आप को विश्व में अग्रणी स्थान पर स्थापित किया है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं में दर्शन, भाषा विज्ञान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्कशास्त्र, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव हितकारी आयाम में अग्रणी भूमिका निभाकर मानव समाज की उन्नति में अग्रज रहा है।

यह ज्ञान परंपरा लंबे समय तक देश देशांतरों को दिशा व दशा प्रदान करती रही। कालांतर में औपनिवेशिक शासन के समय इसका अवमूल्यन प्रारंभ हो गया। फिर धीरे-धीरे इसका स्वरूप परिवर्तित होकर यह सीमित स्वार्थ मूलक उद्देश्यों की पूर्ति तक सीमित होने लगी। औपनिवेशिक शासन काल के दौर में जो क्षति भारतीय ज्ञान परंपरा में हुई उसे धीरे-धीरे अनुसंधानों द्वारा पुर्स्थापित करने का प्रयास सतत जारी है। इसी संदर्भ में नई शिक्षा नीति 2020 प्रकाश में आई व पुनः भारतीय ज्ञान परंपरा को समग्र विकास का धोतक मानकर इसके विविध पहलुओं पर कार्य नीतियां तैयार करने पर बल दिया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति जागृति एवं इसके वर्तमान संदर्भ के साथ सकारात्मक विकास हेतु प्रयास सरकारों द्वारा प्रारंभ किए गए हैं। भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है, इसमें क्षेत्रीयता को समाहित करते हुए ज्ञान को समृद्ध किया जाए तो राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता बरकरार रह पाएगी। इस संदर्भ में सबसे पहला कदम विद्यालय शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करके इसको प्राचीन ज्ञान परंपरा एवं संस्कृति से जोड़ते हुए आगे बढ़ाना है। इस और विविध अनुसंधानों द्वारा तय किया गया की विद्यालय शिक्षा में बच्चों पर पाठ्यक्रम की अधिकता ना होकर ज्ञान व कौशल आधारित शिक्षा प्रणाली संचालित होनी चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा भी इसी भाव पर आधारित रही है।

भारतीय समाज दर्शन

समाज दर्शन में समाज के विभिन्न पहलुओं के बारे में विचार किया जाता है। इस संदर्भ में भारतीय समाज को व्यक्तियों एवं प्रकृति के साथ संबंध,सही दिशा देने वाले मूल्य व सामाजिक विघटन

इत्यादि पर बल रहा है। सामाजिक दर्शन के भाव को समझकर ही सहज परंतु भ्रामक मार्ग को त्याग कर व्यवहारिक तथा सैद्धांतिक धारणाओं की उपयुक्तता, वैधता तथा सामंजस्य पर विचार करके सामाजिक परंपरा से प्राप्त सिद्धांतों की त्रुटियों को पहचाना, उन्हें परिष्कृत और संशोधित करना तथा नए सिद्धांत की रचना करना है। भारत एक विविध सांस्कृतिक एवं सामाजिक सरोकारों का देश है, इसकी बुनियाद में क्षमता स्वतंत्रता, समाजवाद, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता एवं लोकतंत्र समाहित है।

भारतीय समाज में जो भी विविधताएं सनातन से बरकरार रहे हैं वे हमें वर्तमान में सामायोजित होने में कारगर सिद्ध हो सकती है । इन्हें अनुसंधान के साथ परिष्कृत करके स्थापित करना जरूरी है । वर्तमान में जिस प्रकार से सामाजिक विघटन बढ़ता जा रहा है ,उसे परिष्कृत शिक्षा व्यवस्था द्वारा ही संभाला जा सकता है। परिवार संस्था का नष्ट होना शिक्षा में अवमूल्यन का प्रतीक है । समाज को अपने मूल्यों एवं विश्वासों के साथ रहकर विकास करने से ही समग्रता हासिल हो पाएगी । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस संदर्भ में काफी महत्वपूर्ण कार्य योजना तैयार की गई है यदि यह धरातल पर सही प्रकार से लागू हो पाती है तो हमारा समाज पुनः विश्व गुरु की श्रेणी में आ जाएगा।

बस्ता रहित नवाचार

भारतीय ज्ञान परंपरा में जिस प्रकार से पाठ्यक्रमों का बोझ अधिक नहीं रखकर करके सीखने व अनुभव से सीखने का अवसर मिलता था । इसी भाव को आधार बनाकर भारत में कई राज्यों की सरकारों ने विद्यालय शिक्षा व्यवस्था को बस्ता मुक्त करते हुए बस्ता रहित नवाचार शुरू किया है। इसके तहत सप्ताह में एक या दो या और अधिक दिनों तक बच्चे बिना बस्ते के विद्यालय में आकर लर्निंग बाय डूइंग को सार्थक बनाते हैं। इसमें सप्ताह में एक-दो दिन बच्चे आनंददाई अधिगम में ही संभावनाओं को साकार करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम के दबाव से मुक्त रहकर अधिगम करते हैं। यह अधिगम बच्चों में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के सहारे चलकर भविष्य की चुनौतियों से लड़ने में सक्षम बना पाएगा।

राजस्थान सरकार ने शनिवार को विद्यालय शिक्षा को पूर्णता बस्ता रहित रखने के आदेश प्रसारित कर रखे हैं। इस नवाचार का बच्चों पर सार्थक सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इससे बच्चों का शैक्षिक, मानसिक. सामाजिक, नैतिक व शारीरिक विकास संभव हो पा रहा है । भारतीय ज्ञान परंपरा का भाव भी यही कहता है।

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा के आदर्शों को साकार करने में सबसे अग्रणी भूमिका विद्यालय शिक्षा की ही रहती है। यहां पर ही देश का भविष्य तैयार किया जाता है। यहां पर अध्ययनरत बच्चों को सहजता से सीखने के अवसर उपलब्ध होने पर यह समग्रता की और अग्रसर हो पाएंगे, इससे वे समाज व देश को सही दिशा व दशा प्रदान कर सकेंगे। इसी सहजता के लिए बच्चों पर पाठ्यक्रमीय बोझ को कम करके परीक्षाओं के भय को सीमित करके सर्वांगीण विकास संभव हो पाएगा। भारतीय ज्ञान परंपरा को वर्तमान समाज व्यवस्था के सकारात्मक विकास में जुड़ने के लिए विद्यालय शिक्षा को आनंददाई बनाना जरूरी है। इसी से समाज दर्शन के मूल्य साकार हो पाएंगे।

संदर्भ

1. भारतीय ज्ञान परंपरा सरोज शर्मा
2. समाज दर्शन सतपाल गौतम
3. लर्निंग विदाउट बर्डन यशपाल समिति रिपोर्ट
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दस्तावेज